सारांश

प्रथम अध्याय में हमने अपने शोध विषय का संक्षिप्त परिचय दिया है, जिसके अंतर्गत सर्वप्रथम मैंने जल की महत्ता को बताते हुए पृथ्वी पर जल की उपलब्धता के विषय में बताया है। मैंने वैश्विक स्तर पर आने वाले दशकों में जल की मांग के बढ़ने के कारणों के विषय में बताया हूं व जल की गुणवत्ता से संबंधित विषयों पर चर्चा की है। मैंने भारतीय समुद्र तट का संक्षिप्त परिचय देते हुए राष्ट्रीय सुरक्षा व समुद्री वाणिज्य में उसकी भूमिका के विषय में बताया व राष्ट्रीय सुरक्षा, गैर पारंपरिक सुरक्षा व जल सुरक्षा के विषय में संक्षिप्त वर्णन किया है। साहित्य की समीक्षा करते हुए मैंने विभिन्न विषयगत समीक्षा को इस प्रकार विभाजित किया है:

- राष्ट्रीय सुरक्षा एक संकल्पना के रूप में
- भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा व जल बंटवारा।
- जल गैर परंपरागत सुरक्षा के खतरे के रूप में
- जल सहयोग अथवा विवाद का स्रोत

अध्ययन के महत्व, शोध समस्या व शोध पद्धति बताते हुए अंत में अध्याय की रूपरेखा को बताया है।

द्वितीय अध्याय राष्ट्रीय सुरक्षा के सैद्धांतिक रूप रेखा पर आधारित है, जिसमें मैंने सुरक्षा की अवधारणा और सुरक्षा के विभिन्न रूपों जैसे मानव सुरक्षा, राष्ट्रीय सुरक्षा, परंपरागत और गैर परंपरागत सुरक्षा आदि को अवधारणात्मक व ऐतिहासिक रूप से समझाने का प्रयत्न किया है। तत्पश्चात मैंने भारत की सुरक्षा समस्याओं को बताते हुए जल सुरक्षा व राष्ट्रीय सुरक्षा के मध्य संबंध को बताया है और भारत में जल क्षेत्र में व्याप्त चुनौतियों के विषय में बताया है। मैंने भारत के जल परिदृश्य को बताते हुए भारत की नदी प्रणाणियों के विषय में बताया हैं।

तृतीय अध्याय अंतर राज्य जल विवाद व राष्ट्रीय सुरक्षा से संबंधित है जिसमें मैनें बताया है किस प्रकार कुछ राज्य नदी के जल को साझा करने के मुद्दे पर आपस में प्रतिस्पर्धा करते हुए विवाद को जन्म देते हैं जिससे राज्य की घरेलू शांति प्रभावित होती है। फलस्वरुप राष्ट्र की एकता व अखंडता पर प्रभाव पड़ता है जिससे राष्ट्रीय सुरक्षा के समक्ष चुनौती उत्पन्न होती है। मैंने इस अध्याय में कुछ प्रमुख अंतरराज्यीय विवादों के विषय में विस्तार से बताया है। मैंने सर्वप्रथम कावेरी नदी जल विवाद के विषय में बताया कि किस प्रकार कर्नाटक और तमिलनाडु राज्य के मध्य इस विवाद ने भारतीय संघवाद व राष्ट्रीय सुरक्षा को प्रभावित किया है। तत्पश्चात मैंने बताया है कि 1966 में हरियाणा राज्य के उद्भव से पंजाब व हरियाणा में रावी व्यास नदी के जल को लेकर विवाद हुए।ये राज्य जल संसाधन हेतु आपस में ही संघर्ष करने लगे जिसमें कुछ अलगाववादी लोगों ने आंदोलन करते हुए उसे हिंसक रूप दिया, जिसने देश की एकता और संप्रभुता के सम्मुख चुनौती प्रस्तुत किया और राष्ट्रीय सुरक्षा को प्रभावित किया। तत्पश्चात मैंने नर्मदा बचाओ आंदोलन के विषय में बताया कि किस प्रकार नर्मदा नदी पर बनने वाले बांध द्वारा वहां रहने वाले लोगों के पुनर्वास में समस्या आई और उनकी सुरक्षा प्रभावित हुई।

चतुर्थ अध्याय भारत के पड़ोसी देशों (चीन, पाकिस्तान बांग्लादेश, नेपाल और भूटान) से होने वाले जल विवाद और सहयोग व उससे भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा पर पड़ने वाले प्रभाव का विश्लेषण किया है विवाद की ऐतिहासिक पहलुओं को बताते हुए वर्तमान परिस्थिति के बारे में विमर्श किया गया है। मैंने सर्वप्रथम भारत और चीन के मध्य ब्रह्मपुत्र नदी को लेकर होने वाले विवाद के बारे में बताया है व चीन व भारत के मध्य प्रमुख अंतरराष्ट्रीय नदियों का संक्षिप्त विवरण प्रदान किया है। विवाद के ऐतिहासिक बिंदुओं को बताते हुए वर्तमान की परिस्थितियों का वर्णन किया है। तत्पश्चात मैंने भारत पाकिस्तान के मध्य होने वाले जल विवाद की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को बताते हुए सिंधु जल संधि 1960 को बताया और वर्तमान में राष्ट्रीय सुरक्षा पर प्रभाव डालने वाली प्रमुख परियोजनाओं जैसे वुलर बैराज परियोजना, बगलिहार जल विद्युत संयंत्र, किशनगंगा जलविद्युत संयंत्र आदि को

बताया है।भारत बांग्लादेश के मध्य गंगा संधि 1996 के मुद्दे और वर्तमान में तीस्ता नदी व बराक नदी के मुद्दे को बताया कि किस प्रकार वर्तमान में राष्ट्रीय सुरक्षा को प्रभावित कर रहे हैं। भारत नेपाल के मध्य कोसी परियोजना, गंडक परियोजना, करनाली परियोजना, महाकाली संधि के बारे में बताया कि वर्तमान में किस प्रकार इन परियोजनाओं ने भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा को प्रभावित किया है।भारत भूटान के सहयोगात्मक जल संबंध का वर्णन किया है व जल विद्युत सहयोग के विषय में बताया है।

शोध प्रबंध से संबंधित अध्ययन के निष्कर्ष को अध्याय 5 में प्रस्तुत किया गया है। शोध अध्ययन इस निष्कर्ष पर पहुंचता है कि, जल सुरक्षा राष्ट्रीय सुरक्षा के गैर पारंपरिक खतरे के रूप में उभरा है।

भारत उपलब्ध प्रौद्योगिकियों और संसाधनों का सर्वोत्तम उपयोग करके पानी की कमी को दूर करने में सक्षम है।

नदी जल बंटवारा भारत में अंतरराज्यीय और पड़ोसी देशों से संबंधों में संघर्ष का कारण है।

जल सुरक्षा की अवधारणा जल संबंधी मुद्दों के बारे में जागरूकता पैदा करने में मदद करती है।

अंत में मैंने जल सुरक्षा हेतु विभिन्न सुझाव प्रदान किए है, जो निम्न हैः

1. जल संसाधनों में वृद्धि
2. जल में वृद्धि भंडारण क्षमता
3. कुशल सिंचाई पद्धतियां
4. वाटरशेड विकास
5. जल प्रदूषण का नियंत्रण
6. समुद्री जल का विलवरीकरण
7. अनुसंधान और विकास
8. वृक्ष आधारित कृषि प्रणाली